अतः भगवान् श्रीकृष्ण (श्रीविष्णु) के शंखनाद से प्रकट हो रहा है कि विजय एवं श्री अर्जुन की प्रतीक्षा कर रही हैं। इसके अतिरिक्त, जिस रथ में दोनों सखा विराजमान हैं, वह अर्जुन को अग्निदेव ने प्रदान किया था। इस कारण वह रथ त्रिभुवन-दिग्विजय करने में समर्थ है।

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनंजयः।
पौण्ड्रं दध्मौ महाशंखं भीमकर्मा वृकोदरः।।१५।।

पाञ्चजन्यम्=पाञ्चजन्य नामक शंख; **हृषीकेशः**=हृषीकेश भगवान् श्रीकृष्ण ने, जो भक्तों की इन्द्रियों का सञ्चालन करते हैं; **देवदत्तम्**=देवदत्त नामक शंख; **धनंजयः**=धनंजय (विपुल धन प्राप्त करने वाले अर्जुन ने); **पौण्ड्रम्**=पौण्ड्र नामक शंख; **दध्मौ**=बजाया; **महाशंखम्**=महान् शंख; **भीमकर्मा**=अतिमानवीय कर्म करने वाले; **वृकोदरः**=बहुभोजी (भीम) ने।

अनुवाद

भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने पाञ्चजन्य नामक शंख का वादन किया तथा अर्जुन ने देवदत्त शंख बजाया। अतिमानवीय कर्म करने वाले अतिभोजी भीम ने पौण्ड्र नामक शंख की भंयकर ध्वनि की।।१५।।

तात्पर्य

इस श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण को **हृषीकेश** कहा गया है, क्योंकि वे सम्पूर्ण इन्द्रियों के स्वामी हैं। जीव उनके भिन्न-अंश हैं, अतः जीवों की इन्द्रियाँ भी उनकी इन्द्रियों की भिन्न-अंश हैं। निर्विशेषवादी जीवों की इन्द्रियों का कारण बताने में असमर्थ हैं। इसीलिए वे सदा जीवों को इन्द्रियरहित अथवा निर्विशेष कहने को उत्कण्ठित रहते हैं। यथार्थ में सब जीवों के अन्तर्यामी श्रीभगवान् ही उनकी इन्द्रियों का निर्देशन करते हैं। अपने प्रति जीव की शरणागति के अनुपात में वे उसका नियन्त्रण करते हैं। किन्तु शुद्ध भक्त की इन्द्रियों का तो वे प्रकट रूप से संचालन करते हैं, जैसे कुरुक्षेत्र की इस युद्धभूमि में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन की चिन्मय इन्द्रियों का प्रत्यक्ष नियन्त्रण कर रहे हैं। इसलिए उन्हें **हृषीकेश** सम्बोधित किया गया है। श्रीभगवान् की विविध रसमयी लीलाओं के अनुसार उनके विविध नाम हैं। उदाहरणार्थ उन्होंने मधु नामक दैत्य का वध किया, इसलिए मधुसूदन कहलाये; गायों एवं इन्द्रियों को रसानन्द का आस्वादन कराते हैं, इसलिए गोविन्द हैं; वसुदेव के पुत्ररूप में प्रकट होने के कारण वासुदेव नाम से प्रख्यात हैं; देवकी को माता स्वीकार करने से देवकीनन्दन कहलाए; श्रीधाम वृन्दावन में अपनी बाललीला का यशोदा मैय्या को आस्वादन कराया, इसलिए उनका यशोदानन्दन नाम हुआ तथा सखा अर्जुन का सारथ्य करने से उन्हें पार्थसारथी कहा गया। इसी प्रकार कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि में अर्जुन के मार्गदर्शक के रूप में उनका एक नाम हृषीकेश है।

अर्जुन को इस श्लोक में **धनंजय** कहा गया है, क्योंकि नाना यज्ञों के लिए